	# बाँदा कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय बाँदा - २१०००१ (उ0प्र0)

मौसम आधारित कृषि सलाह

(Agro-Weather Advisory Bulletin No.:90/2023 (16-30 September)
Year: 5th

जिला: बाँदा	जारी करने की तिथि: 16/09/2023

क्रम सं	विभाग	सलाह
1-	शाक-भाजी	➢ यदि टमाटर, बैगन, मिर्च, पत्ता गोभी, फूल गोभी आदि की पौधशाला तैयार न हो तो अविलंब बुआई कर दें। ➢ प्रचुर मात्रा में कंपोस्ट प्रयोग करके खेत की तैयारी कर लें, मेड़ी अथवा उठी हुई क्यारियां तैयार करके गोभी, बैंगन, टमाटर, मिर्च आदि की तैयार पौधों की रोपाई करें। ➢ बेमौसमी मूली, पालक, गाजर, राई साग, फ्रेंचबीन की भी उठी हुई क्यारियों अथवा मेडियों पर बुआई कर सकते हैं। ➢ अवृष्टि की स्थिति में अल्प मात्रा में ही सही किंतु एक निश्चित अंतराल पर सिंचाई अवश्य करें। ➢ सब्जी मटर की बुआई हेतु खेत की तैयारी कर लें।
2-	शस्य-प्रबंधन एवं मृदा-प्रबंधन	➢ इस मौसम की फसलों में खरपतवार की समस्या अधिक होती है। समय समय पर निराई गुड़ाई करते रहने से इस पर नियंत्रण रखा जा सकता है । ➢ तोरिया की बुवाई इस माह के पहले से दुसरे पखवाड़े में कर दें। बुवाई हेतु उन्नत किस्मो का 3-4 किग्राबीज प्रति हैक्टेयर प्रयोग करें। बुवाई लाइनों . में 30 सेकी दूरी पर करें। बीज की गहराई .मी. 3-4 सेमीतक रखें। बुवाई . के पूर्व बीज का शोधन 2.5 ग्राम थाइरम प्रति किग्रा बीज की दर से करें। संतुलित मात्रा में उर्वरकों का प्रयोग करें। ➢ तिल की फसल जल भराव के प्रति अधिक संवेदनशील अतः जल निकास का समुचित उपाय करना चाहिए । जलमग्नता कई रोगों का करक होता है। ➢ धान की फसल में कल्ले बनने की अवस्था अत्यंत संवेदनशील होती है इस अवस्था में समुचित जल प्रबंधन अति आवश्यक होता है जल की ५ से ८ सेमी गहराइ हमेशा बनाये रखना चाहिऐं। ➢ ४० से ५० किग्रा यूरिया प्रति एकड़ की दर से कल्ले बनने की अवस्था पर प्रयोग करना चाहिऐं। ➢ पोटाश की कमी के लक्षण दिखने पर १०-१५ किग एम्० ओ० पि० प्रति एकड़ की दर से प्रयोग करें । ➢ ०.५ प्रतिशत पोटाश के घोल का छिड़काव भी धान की फसल के लिए लाभदायक होता हैं। ➢ धान की सीधी बुवाई में बुवाई के 55—60 दिन बाद 40—50 किग्रा0 / एकड़ की दर से यूरिया डालें।

		दलहन दलहन की फसल की बडबार अच्छी नहीं है तो उसमे १ : NPK मिश्रण; (१५० ग्राम NPK जल घुलनशील उर्वरक को १५ लीटर की टंकी में घोले) का पर्ण छिड़काव करे।
3-	**पशुपालन प्रबंधन**	वर्तमान मौसम में वातावरण में अधिक आद्रता होने की वजह से वातावरण के तापमान में अधिक उतार–चढाव देखने को मिलता हे जिसका कुप्रभाव प्रत्येक श्रेणी के पशुओं पर पड़ता है। वातावरण में आद्रता की अधिकता के कारण पशु की पाचन प्रक्रिया के साथ–साथ उसकी रोगरोधक छमता पर भी असर पड़ता है। परिणामस्वरूप पशु अनेक रोगों से ग्रसित हो जाता है। इस मौसम में परजीवियों की संख्या में अधिक वृद्धि देखने को मिलती है जिनके द्वारा भी पशुओं को कई तरह के रोग हो जाते हैं। इन् रोगों के प्रकोप से पशु का स्वास्थ्य बिगड़ जाता है जिससे पशुपालकों को भारी आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। पशुपालकों को इन् रोगों से बचाव हेतु टीकाकरण, शेड की साफ–सफाई व परजीवियों की रोकथाम हेतु कीटनाशक दवाईओं का सेवन पशुओं को कराना चाहिए। पशुपालकों को रोग ग्रसित पशु को स्वस्थ पशु से अलग कर पशु चिकित्सक द्वारा उपचार कराना चाहिए। इस मौसम में पशुओं को बाहर भेजने से पहले भर पेट पानी पीला के ही बाहर भेजना चाहिए जिससे वे गड्ढे, तालाब, पोखर इत्यादि में भरा प्रदूषित जल न पी सकें एवं उनका बचाव प्रदूषित पानी से होने वाले रोगों से हो सके।
4–	**कीट–प्रबंधन**	➢ धान में तना बेधक कीट के निगरानी हेतु गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) का प्रयोग करना चाहिए व नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा को 3–5 सेमी0 पानी में बुरकाव करें। हरा फुदका के नियंत्रण हेतु कार्बोफ्यूरान 3 जी 20 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से बुरकाव करें। भूरा फुदका के नियंत्रण हेतु यदि सम्भव हो तो खेत से पानी निकाल देना चाहिए व यूरिया की टाप ड्रेसिंग रोक देनी चाहिए। नीम तेल @ 5 मिली प्रति ली के घोल का छिड़काव करें अथवा पाईमेट्रोजेन 50 प्रतिशत डब्ल्यू जी 300 ग्रा0 प्रति हे0 500 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ अरहर में चोटी बेधक कीट के नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 2. 00 लीटर प्रति हे0 800–1000 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिये। ➢ मक्का/ज्वार/बाजरा में तना बेधक कीट के नियंत्रण हेतु कार्बाफ्यूरान 3 प्रतिशत 20 किग्रा0 अथवा कारटाप हाइड्रोक्लोराइड 4 प्रतिशत की 20 किग्रा0 मात्रा का प्रयोग करना चाहिय अथवा क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 1.50 लीटर मात्रा

		का 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हे0 की दर से छिड़काव करना चाहिये। मक्का में फाल आर्मीवर्म के नियंत्रण हेतु इमामेक्टिन बेंजोएट कीटनाशी की 4 ग्राम मात्रा प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें अथवा क्लोरंतरनिलीप्रोल रसायन का 4 मिलीलीटर प्रति 10 लीटर की दर से प्रयोग करें। ➢ उर्द/मूँग में बालदार गिडार व फली बेधक के नियंत्रण हेतु फसल की नियमित निगरानी करते रहना चाहिए। 5 गंधपाश (फेरोमैन ट्रैप) प्रति हे0 की दर से प्रयोग करना चाहिए। बैसिलस थूरिनजिएन्सिस (बी0टी0) 1.0 किग्रा0 प्रति हे0 की दर से 400–500 ली0 पानी में घोलकर आवश्यकतानुसार 15 दिन के अन्तराल पर सायंकाल छिडकाव करना चाहिए। एजाडिरैक्टिन (नीम आयल) 0.15 प्रतिशत ई0सी0 2.5 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। रासायनिक नियंत्रण हेतु क्यूनालफास 25 प्रतिशत ई0सी0 की 1.25 ली0 प्रति हे0 की दर से 600–700 ली0 पानी में घोलकर छिडकाव करना चाहिए। उर्द/मूँग में पीला मोजैक रोग के वाहक कीट सफेद मक्खी व पाड सकिंग बग की रोकथाम हेतु इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। ➢ टमाटर, फूलगोभी, मिर्च, शिमला मिर्च, पत्तागोभी, बैगन की नर्सरी में प्रारम्भ में सफेद मक्खी के प्रवेश को रोकने के लिए लो–टनल पॉलीहाउस का प्रयोग करें। पूर्व में रोपित बैगन की फसल में कलंगी एवं फल बेधक कीट के नियंत्रण हेतु 10 मीटर के अन्तराल पर प्रति हेक्टेयर में 100 फेरोमोन ट्रेप लगाकर वयस्क नर कीट पकड़ कर नष्ट कर देना चाहिए। सब्जियों में कीटों के नियंत्रण हेतु नीम गिरी 4 प्रतिशत (40 ग्रा0 नीम गिरी का चूर्ण 1 ली0 पानी में) का घोल बनाकर 10 दिन के अन्तराल पर छिड़काव करना चाहिए।
5–	**पादप रोग प्रबंधन**	➢ इस मौसम में सुगन्धीय धान की प्रजातियों में आभासी कण्ड (फाल्स स्मट)रोग आने की काफी सम्भावनाए है। इस रोग के आने पर धान के दाने आकार में बडे हो जाते है। दाने पीले से संतरे रंग के और बाद में जैतूनी हरे रंग के गोलाकार दाने के रूप में परिवर्तित हो जाते हैं। रोगग्रस्त दाने अनियमित और बड़े आकार के हो जाते हैं। इस रोग की रोकथाम हेतु प्रोपिकोनाजोल 25 प्रतिशत ईसी की 500 मि.ली. **मात्रा** को 500–600 लीटर पानी में घोलकर प्रति हैक्टर छिड़काव करें। छिड़काव **50 प्रतिशत बालियां आने पर** करें तथा 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार दूसरा छिडकाव करें। ➢ धान की फसल में जीवाणु झुलसा (बैक्टीरियल लीफ ब्लाइट) रोग के लक्षण प्रकट होने पर यदि धान की खड़ी फ़सल में पत्तियों का रंग पीला पड़ रहा हो तथा इन पर जलशोक धब्बे बना रहे है जिसके कारण आगे जाकर पूरी पत्ती पीली पड़ने लगे तो इसके रोकथाम के लिए 100 ग्राम स्ट्रेप्टोसायाक्लिन और 500 ग्राम कॉपर ऑक्सीक्लोराईड का 500–600 लीटर पानी में घोल बनाकर प्रति हेक्टेयर छिडकाव करें।10 से 12 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार दूसरा एवं तीसरा छिडकाव करें।

		➢ धान की फसल में प्रध्वंश या झोंका रोग (ब्लास्ट) के लक्षण दिखायी देने पर रोग के नियंत्रण हेतु टेब्यूकोनाजोल **50% + ट्राइफ्लोक्सीस्ट्रोबिन 25% w/w** (नटीवो) 200 ग्राम अथवा प्रोपिकोनाजोल 25 प्रतिशत इसी–500 मि.ली., में से किसी एक रसायन को प्रति हैक्टर 500–600 लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करना चाहिए एवं 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकतानुसार दूसरा छिडकाव करें। ➢ उर्द व मूंग के पीले मोजैक **विषाणु** रोग के लक्षण दिखाई देने पर विषाणु वाहक कीट के नियंत्रण हेतु थायोमेथोक्साम 25 प्रतिशत डब्लू0 जी0 3 ग्राम को 10 लीटर अथवा इमिडाक्लोप्रिड 17.8 प्रतिशत एस0एल0 3 मिली0 को 10 लीटर पानी में घोल बनाकर 15 दिन के अन्तराल पर आवश्यकता अनुसार छिड़काव करें। • जो किसान भाई तोरिया /सरसों की अगेती बुवाई करना चाहते है वे बुवाई से पूर्व बीज को वाविस्टिन अथवा थिरम 2 ग्राम प्रति किलो ग्राम बीज की दर से बीजोंउपचार करके बोयें।
6.	**बागवानी. प्रबंधन**	इस माह भी नये पौधे लगाने का कार्य कर सकते है। पौधे लगाने के तुरन्त बाद सिंचाई जरूर दें। इस दिन हल्का पानी एक सप्ताह तक और अगले एक सप्ताह तक एक दिन छोड़ कर बाद में आवश्यकतानुसार पानी दें। छोटे पौधों को बंछटी से सहारा देकर सीधा रखें यदि दीमक का प्रकोप हो तो उपचार करें। वायु अवरोधक वृक्ष न लगे हो तो इनका रोपन उत्तर–पश्चिम दिशा में जरूर लगायें। अंतर शस्य फसल में चना तथा मटर बोयें। **नींबू वर्गीय फलों में मुख्य कृषि कार्य** ➢ नींबू वर्गीय फलों का गिरनाः नींबू वर्गीय फलों में यह मुख्यतः दो कारण से होता है । पादप कार्यकीय कारक – अनियमित सिंचाई व्यवस्था, पोषक तत्वों की कमी, मौसम सम्बन्धी कारक। उपचारः फलों की तुड़ाई के 2 महीने पहले सितम्बर माह में 2,4–डी का 10 पी.पी.एम. घोल का छिड़काव करना चाहिए। ➢ नींबू वर्गीय फलों में यदि डाईबैक, स्केब तथा सूटी मोल्ड बीमारी का प्रकोप हो तो कॉपर ऑक्सीक्लोराइड (3 ग्राम/लीटर पानी) का छिड़काव करें। ➢ कैंकर बीमारी की रोकथाम के लिए पौधों में स्ट्रेप्टोसाइक्लीन तथा कॉपर सल्फेट (5 ग्राम स्ट्रेप्टोसाइक्लीन, 10 ग्राम कॉपर सल्फेट/100 लीटर पानी में) या कॉपर ऑक्सीक्लोराइड 3 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल बनाकर छिड़काव करें। **आम में मुख्य कृषि कार्य** ➢ वयस्क आम के पौधों में बची हुई उर्वरक की मात्रा (500 ग्राम नत्रजन, 250 ग्राम फास्फोरस, 500 ग्राम पोटाश) को मानसून की बारिश के पश्चात डाले। ➢ आम में गमोसिस रोग की रोकथाम के लिए प्रति पेड़ (10 वर्ष या अधिक आयु के पौधे के लिए) 250 ग्राम जिंक सल्पेफट, 250 ग्राम कॉपर सल्फेट, 100 ग्राम बुझा हुआ चूना व 125 ग्राम बोरेक्स पेड़ के मुख्य तने से एक मीटर की दूरी पर 2–4 मीटर व्यास के अन्दर मिट्टी में मिलायें। वर्षा न होने की स्थिति में तुरन्त हल्की सिंचाई कर दें। ➢ आम में एंथ्रेक्नोज रोग से बचाव के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड की 3 ग्राम मात्रा को 1 लीटर पानी में घोल आवश्यकतानुसार छिड़काव करें। **अनार में मुख्य कृषि कार्य**

- अनार में फलों का फटना एक गंभीर कार्यिकी विकार है। मृग बहार मे यह विकार सबसे ज्यादा होता है। यह विकार अनियमित सिचांई, बोरान तत्व की कमी, फल विकास के समय तापक्रम में अत्याधिक उतार–चढ़ाव के कारण होता है।
- उचित प्रबंधन के लिए फल बनने से पकने तक नियमित सिंचाई की व्यवस्था, 0.1 प्रतिषत बोरेक्स का पर्णीय छिड़काव, अनार के बगीचे के चारो ओर वायु अवरोधी पौधे लगाना काफी प्रभावी रहता है। इसके अलावा किस्में जैसे, बेदाना, खागे, जालौर सीडलेष इस विकार के प्रतिरोधी किस्में है।

अमरूद मे मुख्य कृषि कार्य

- अमरूद में इस समय पौध रोपण की जाती है। अकार्बनिक उर्वरकों की आधी मात्रा मई –जून तथा बची हुई आधी मात्रा सितम्बर माह में दी जाती है। इस माह में अमरूद मे मृग बहार का समय है तथा इसमें अभी फल आने की स्थिति है, जो कि नवम्बर जनवरी तक पककर तैयार हो जाते है।
- अमरूद की हिसार सफेदा, हिसार सुरखा, इलाहाबादी सफेदा, बनारसी सुरखा, लखनऊ–49, ललित तथा सरदार किस्मों को सितंबर में लगाया जा सकता है।
- नये बागों की नियमित सिंचाई करें।
- अमरूद में फल मक्खी के नियंत्रण हेतु फेरोमोन ट्रैप (मिथाइल यूजेनॉल ल्योर) 10 प्रति एकड़ की दर से पेड़ पर लगावें एवं डायमिथोएट 930 ई.सी. / 1.0 मिली प्रति लीटर पानी में घोलकर 15 दिन के अंतराल पर दो बार छिड़काव करें।

केले में मुख्य कृषि कार्य

- केले में प्रति पौधा 55 ग्राम यूरिया पौधे से 50 सें.मी. दूर घेरे में प्रयोग कर हल्की गुड़ाई करके भूमि में मिला दें।
- केला बीटिल की रोकथाम के लिए मोनोक्रोटोफॉस 1.25 मि.ली. प्रति लीटर पानी में घोलकर छिड़काव करें। कार्बोफ्यूरान 3–4 ग्राम या फोरेट 2.0 ग्राम प्रति पौधे की दर तने के चारों ओर मिट्टी में मिलायें तथा इतनी ही मात्रा गोफे में डालें।
- लीफ स्पाट रोग के रोकथाम हेतु डाईथेन एम–45 के 2.0 ग्राम अथवा कॉपर ऑक्सीक्लोराइड के 2.5 ग्राम प्रति लीटर पानी में घोल 2–3 छिड़काव 10–15 दिन के अंतर से करना चाहिए
- केले में यदि बीटल कीट दिखाई दे तो इसके रोकथाम के लिये डाइमेथोएट 1.5 मिलीलीटर प्रति लीटर पानी के हिसाब से घोल बनाकर छिड़काव करें।

आंवला में मुख्य कृषि कार्य

- आंवला में इन्दर बोल कीट की रोकथाम के लिए डाइक्लोरोवास (नुवान) 1.0 मि.ली. प्रति लीटर पानी में बने घोल में रूई भिगोकर सलाई की मदद से छेदों में छालकर चिकनी मिट्टी से बन्द करें।
- आन्तरिक सड़न प्रबंधक के लिए जिंक सल्फेट (0.4 प्रतिशत) कॉपर सल्फेट (0.4 प्रतिशत) तथा बोरेक्स (0.4 प्रतिशत) का छिड़काव सितम्बर–अक्टूबर माह में करना लाभप्रद होता है।

बेर में मुख्य कृषि कार्य

		➢ सितंबर में बेर की रोपाई हो सकती है। पौधे निकालने से पहले फालतू पत्ते उतार दें। ➢ नये पौधे की 17 दिनों के अन्तर पर सिंचाई करें व बेर के पुराने बागों की भी सिंचाई करें। **करौंदा में मुख्य कृषि कार्य** ➢ करौंदा के पके फलों की तुड़ाई करके बीज निकाल लें तथा नए पौधे तैयार करने के लिए बीजों की पौधशाला में बुआई करें। **बेल में मुख्य कृषि कार्य** बेल के पेड़ों पर शाटहोल रोग की राकेथाम के लिए कॉपर ऑक्सीक्लोराइड का छिड़काव करें। नए बाग लगाने के लिए रोपण का कार्य करें।
7.	**वानिकी प्रबंधन**	➢ जून /जुलाई माह में रोपित पौध, जो कि मृत हो गए हैं, स्वस्थ पौधों से प्रत्यारोपित करें। ➢ खेतों में कृषि वानिकी के अंतर्गत लगाए गए पेड़ों की उचित देखभाल करते हुए आवश्यकतानुसार निराई गुड़ाई और सफाई करें ताकि पेड़ों में अच्छी वृद्धि हो सके। ➢ नर्सरी क्षेत्र में स्वच्छता बनाए रखने के लिए यह सलाह दी जाती है कि क्षेत्र को खरपतवार मुक्त रखें और सभी क्षय / बेकार लकड़ी और मलबे को जला दें। ➢ पौधशाला में जल निकासी नालियों/चैनलों को साफ रखें।

वैज्ञानिक सलाहकार मंडल-

1. डॉ जी. एस. पंवार	7. डॉ मयंक दुबे
2. डॉ दिनेश साह	8. डॉ अमित मिश्रा
3. डॉ ए.सी. मिश्रा	9. डॉ दिनेश गुप्ता
4. डॉ ए.के. श्रीवास्तव	10. डॉ पंकज कुमार ओझा
5. डॉ राकेश पाण्डेय	11. डॉ सुभाष चंद्र सिंह
6. डॉ विवेक सिंह	